Dr. Nutisri Dubey
Assistant Professor
Dept. of Philosophy
H.D. Jain College, Ara

U.G. Sem – IV
M.J.C – 05 : Western Philosophy
Descartes – Absolute Substance : 'God'

निरपेक्ष द्रव्य : 'ईश्वर'

डेकार्ट ने ईश्वर की अवधारणा एक निरपेक्ष द्रव्य के रूप में की है। डेकार्ट ने कहा है कि 'ईश्वर' शब्द से मेरा अभिप्राय एक ऐसे निरपेक्ष द्रव्य से है जो अनंत, स्वतंत्र सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है तथा जिसने मुझे और अन्य सभी वस्तुओं को उत्पन्न किया है। इस प्रकार ईश्वर का संप्रत्यय एक ऐसी पूर्ण सत्ता की चेतना है जो प्रत्येक प्रकार की अपूर्णताओं से रहित है। डेकार्ट के अनुसार ईश्वर जगत् का निमित्त कारण है। आत्मा तथा जड़ द्रव्य एक दूसरे से स्वतंत्र हैं किन्तु ये दोनों ईश्वर द्वारा उत्पन्न किये गये हैं। ईश्वर अनंतगुणसम्पन्न और अबोधगम्य है। उसके ज्ञान की परिधि

से भूत, वर्तमान और भविष्य काल की कोई भी वस्तु नहीं बच सकती। इसलिए डेकार्ट ईश्वर को सर्वज्ञ कहते हैं।

इस संदर्भ में डेकार्ट द्वारा ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए दी गयी कुछ युक्तियाँ उल्लेखनीय हैं।

(i) प्रत्यय सत्तामूलक युक्ति– प्रत्यय सत्तामूलक युक्ति का प्रतिपादन मध्ययुग के ईसाई सन्त एन्सेल्म ने किया था। आधुनिक युग में डेकार्ट ने इस युक्ति को विकसित और परमार्जित रूप में प्रस्तुत किया। इस युक्ति के अनुसार हमारे मन में ईश्वर की पूर्णता का जन्मजात प्रत्यय है। हम जगत् में स्थित वस्तुओं के साथ-2 स्वयं को भी अपूर्ण पाते हैं। यदि हमारी आत्मा में पूर्णता का प्रत्यय निहित न होता तो हम अन्य वस्तुओं को अपूर्ण नहीं कह सकते थे। डेकार्ट के अनुसार अपूर्ण वस्तु के प्रत्यय से किसी वस्तु की संभावना मात्र का प्रतिपादन किया जा सकता है, इसके विपरीत पूर्ण तत्व के प्रत्यय से उसका अस्तित्व अनिवार्यतः सिद्ध होता है क्योंकि पूर्णता के प्रत्यय में उसका अस्तित्व भी सम्मिलित हो जाता है। इस युक्ति में डेकर्ट ने ईश्वर की पूर्णता के प्रत्यय से ईश्वर की ~~अस्तित्व~~ सत्ता का प्रतिपादन किया है। ईश्वर की पूर्णता के प्रत्यय (विचार) मात्र से उसकी सत्ता तर्कतः सिद्ध हो जाती है। अतः इस युक्ति को एक प्रागनुभविक अथवा अनुभव निरपेक्ष तर्क (A priori Argument) भी कहा जा सकता है।

ईश्वर की पूर्णता के प्रत्यय (सार तत्व) से उसका अस्तित्व उसी प्रकार तर्कतः फलित होता है, जिस प्रकार त्रिभुज के प्रत्यय से उसकी त्रिकोणात्मकता (उसमें तीन कोणों का होना) तार्किक दृष्टि से सिद्ध हो जाती है। यह युक्ति ईश्वर की पूर्णता के प्रत्यय को जन्मजात मानती है। इसमें ईश्वर के 'अस्तित्व' को पूर्णता के प्रत्यय के अन्तर्गत सम्मेलित कर लिया गया है।

प्रत्यय सत्तामूलक युक्ति के विरुद्ध एक प्रमुख आक्षेप यह है कि 'अस्तित्व' को 'गुण' नहीं कहा जा सकता है। यदि अस्तित्व को गुण मान लिया जाय तो उसके आश्रय के रूप में एक अन्य अस्तित्व की कल्पना करनी पड़ेगी। पुनश्च यदि इस दूसरे अस्तित्व को भी गुण मान लिया जाय तो तीसरे अस्तित्व की कल्पना करनी पड़ेगी। अतः अस्तित्व को गुण मान लेने पर अनवस्था दोष (Fallacy of infinite Regress) से नहीं बचा जा सकता है। वास्तव में 'अस्तित्व गुण' को स्थापित करने की एक तार्किक प्रागपेक्षा (Logical Presupposition) है।

यह युक्ति इस मान्यता पर आधारित है कि ईश्वर का प्रत्यय जन्मजात होता है। यदि ईश्वर का प्रत्यय जन्मजात होता तो कोई भी व्यक्ति निरीश्वरवादी न होता। इसके अतिरिक्त बच्चों, मूर्खों और पागलों को ईश्वर की पूर्णता का कोई ज्ञान न होता। वस्तुतः यह आक्षेप अनुभववादी पूर्वाग्रहों पर आधारित है। सत्तामूलक युक्ति एक प्रागनुभविक तर्क है। किन्तु अनुभववादी जन्मजात प्रागनुभविक ज्ञान को असंभव मानते हैं।

गौनिलो के अनुसार पूर्णद्वीप के प्रत्यय से उसके वास्तविक अस्तित्व को सिद्ध नहीं किया जा सकता है। आधुनिक युग में काण्ट ने भी इस युक्ति का खण्डन किया। काण्ट के अनुसार यदि किसी वस्तु के प्रत्यय मात्र से उसका अस्तित्व सिद्ध होता तो प्रत्येक व्यक्ति अपने जेब में डालरों की कल्पना करके उन्हें प्राप्त कर लेता।

सत्तामूलक युक्ति के समर्थकों का दावा है कि जिस प्रकार त्रिभुज के प्रत्यय में तीन कोणों का होना निहित है, उसी प्रकार ईश्वर की पूर्णता के प्रत्यय में उसका अस्तित्व भी सम्मिलित हो जाता है। यह युक्ति एक भ्रामक दृष्टिकोण पर आधारित है। यदि कोई व्यक्ति त्रिभुज के सम्प्रत्यय को स्वीकार करते हुए भी 'त्रिकोणात्मकता' के

संप्रत्यय को न स्वीकार करता है तो उसके चिन्तन में अन्तर्-विरोध हो सकता है। किन्तु यदि कोई व्यक्ति त्रिभुज और त्रिकोणात्मकता, इनमें से दोनों को न स्वीकार करे तो कोई अन्तर्विरोध नहीं होगा। सत्तामूलक युक्ति से केवल यह सिद्ध होता है कि यदि कोई पूर्ण ईश्वर है तो उसका अस्तित्व अवश्य होना चाहिए। किन्तु इससे यह सिद्ध नहीं होता कि वास्तव में ईश्वर का अस्तित्व है।

इसके अतिरिक्त इस युक्ति में ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने से पहले ही उसे सत् मान लिया गया है। इसे एक युक्ति की सहायता से समझा जा सकता है—

जो पूर्ण है वह सत् है
ईश्वर पूर्ण है।
अतः ईश्वर सत् है।

इस युक्ति में ईश्वर के अस्तित्व को उसकी पूर्णता के प्रत्यय में पहले से ही मान लिया गया है। यहाँ ईश्वर के अस्तित्व को तार्किक निष्कर्ष के रूप में नहीं, बल्कि एक पूर्व मान्यता के रूप में स्वीकार कर लिया गया है। जर्मन दार्शनिक हेगल और एफ. एच. ब्रैडले ने इस युक्ति का समर्थन किया है। उनके अनुसार काण्ट और अन्य दार्शनिकों के द्वारा उठाई गयी आपत्तियाँ प्राकृतिक वस्तुओं पर भले ही लागू हों, किन्तु ईश्वर पर लागू नहीं होती हैं।

यद्यपि यह युक्ति सन्त एन्सेल्म एवं डेकार्ट के समय से ही विवादास्पद रही है, तथापि दर्शन के इतिहास में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। कुछ आलोचकों ने इस युक्ति की व्याख्या मूल्यमीमांसीय दृष्टि से की है। ईश्वर की पूर्णता न तो मनोवैज्ञानिक दृष्टि से है और न भौतिक दृष्टि से है। उसकी पूर्णता मूल्यपरक दृष्टि से है। जिस प्रकार 'सोचने' से 'होना' (अस्तित्व) सिद्ध होता है, अर्थात् आत्मा के प्रत्यय से उसका अस्तित्व सिद्ध होता है, उसी प्रकार ईश्वर की पूर्णता के प्रत्यय से समस्त सद्गुणों के एकायन (ऐक्य) ईश्वर का अस्तित्व भी सिद्ध होता है।

(ii) कारणात्मक अथवा सृष्टिवैज्ञानिक युक्ति (Causal or Cosmological Argument) — डेकार्ट के दर्शन में इस युक्ति के दो रूप मिलते हैं।-

(1) ईश्वर को ईश्वर के प्रत्यय का कारण माना गया है। डेकार्ट के अनुसार मेरे मन में ईश्वर की सत्ता का विचार उत्पन्न होता है। इस विचार का कारण स्वयं ईश्वर ही हो सकता है क्योंकि यह एक अनंत पूर्ण तत्व का विचार (प्रत्यय) है। इस अनंत सत्ता के प्रत्यय का कारण सीमित मानव बुद्धि नहीं हो सकती है। यह युक्ति इस मान्यता पर निर्भर है कि कारण को कार्य से न्यून नहीं होना चाहिए। डेकार्ट कहते हैं — "इसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि ईश्वर ने मेरी सृष्टि करते समय ही मेरे मन में इस प्रत्यय (ईश्वर) को उसी प्रकार रख दिया जिस तरह एक श्रमिक के कार्यों की छाप उसके कार्यों पर अंकित हो जाती है।"

(2) इस युक्ति का दूसरा रूप भी मिलता है। डेकार्ट के अनुसार "ईश्वर शब्द का अर्थ मैं एक अनन्त, नित्य, स्वतन्त्र और सर्वशक्तिमान द्रव्य से करता हूँ और जिसके द्वारा मेरी और अन्य वस्तुओं की, यदि वे हैं, उत्पत्ति हुई है।" मनुष्य अपना कारण स्वयं नहीं हो सकता। यदि मनुष्य में स्वयं को उत्पन्न करने की शक्ति होती तो वह निश्चित रूप से पूर्ण होता। डेकार्ट कहते हैं कि जो मेरे अस्तित्व का कारण है वह या तो अपना कारण स्वयं है अथवा किसी अन्य सत्ता पर आधारित है। कार्य-कारण की यह शृंखला अनन्त तक चल सकती है अन्यथा अनवस्था दोष से नहीं बचा जा सकता है। इस दोष से बचने के लिए एक आदि कारण स्वीकार करना पड़ेगा। यह आदि कारण ईश्वर है।

डेकार्ट के अनुसार चूँकि समस्त सृष्टि सीमित, जड़ रूप और कार्य है, इसलिए जड़तत्व स्वयं अपना कारण नहीं हो सकता। यह

केवल उपादान कारण ही हो सकता है। इसी प्रकार का तर्क अद्वैतवेदान्तियों ने सांख्य की प्रकृति का खण्डन करने के लिए दिया है। अद्वैतवेदान्तियों के अनुसार अचेतन तत्व अपने संचालन के लिए एक चेतन तत्व की अपेक्षा रखता है। उदयनाचार्य के समान डेकार्ट ने ईश्वर को सृष्टि का केवल निमित्तकारण माना है। वह जगत का उपादान कारण नहीं है।

यदि ईश्वर को सृष्टि का केवल निमित्तकारण माना जाय तो ईश्वर सृष्टि की रचना करने के लिए उपादान कारण पर आश्रित होगा। इससे ईश्वर सीमित और उपादान-सापेक्ष हो जाता है। किन्तु सीमित ईश्वर की अवधारणा ईश्वरवादी मान्यता के विरुद्ध है। डेकार्ट ने ईश्वर को सीमित जीवात्माओं का कारण माना है। काण्ट के अनुसार कार्य-कारण सम्बन्ध एक बुद्धि-विकल्प है। इसका प्रयोग ईश्वर के ऊपर नहीं किया जा सकता है। बुद्धि-विकल्पों (Categories of Understanding) का प्रयोग प्राकृतिक जगत की सीमा में ही किया जा सकता है। अद्वैत वेदान्तियों के अनुसार परमार्थ के ऊपर कारणता का प्रयोग करना एक प्रकार का अध्यास (Superimposition) है।

यदि ईश्वर को आदिकारण मान लिया जाय तो वह कार्य-कारण शृंखला की एक कड़ी हो जायगा तथा अन्य कारणों के समान सीमित हो जायगा। कारण-कार्य शृंखला की कड़ी मानने पर ईश्वर भौतिक हो जाता है। सीमित, अपूर्ण और भौतिक ईश्वर को ईश्वर नहीं कहा जा सकता है। इस दोष से बचने के लिए यह दावा किया जाय कि कारण-कार्य शृंखला की कड़ी नहीं है तो अकारण कारण दोष उत्पन्न हो जायगा। इसके परिणाम स्वरूप ईश्वर को सृष्टि का कारण नहीं कहा जा सकता। अतः निमित्त कारण मूलक युक्ति ईश्वर की सत्ता को सिद्ध नहीं कर पाती। उल्लेखनीय है कि डेकार्ट

ईश्वर और सृष्टि में आन्तरिक सम्बन्ध नहीं, बाह्य सम्बन्ध मानते है। यह मत केवल निमित्तेश्वरवाद (Deism) के नाम से जाना जाता है। इसके आधार पर ईश्वर और सृष्टि के बीच में कारण-कार्य सम्बन्ध की तर्कसंगत व्याख्या नहीं की जा सकती है।

ह्यूम के अनुसार सम्पूर्ण कारण-कार्य शृंखला प्राकृतिक जगत के अन्तर्गत है। अतः प्राकृतिक जगत को एक कार्य नहीं माना जा सकता है। ~~कारण-कार्य सम्बन्ध सांसारिक वस्तुओं में माना जाता है।~~ ह्यूम की एक अन्य आपत्ति यह है कि यदि यह मान भी लिया जाय कि सृष्टि का कोई आदि कारण अवश्य है, तो भी यह सिद्ध नहीं होता है कि वह मूल कारण ईश्वर है। वह मूल कारण ईश्वर नहीं, बल्कि कोई जड़ सत्ता हो सकती है। इसके अतिरिक्त इस सीमित और जड़-जगत का आदि (मूल) कारण भी सीमित एवं जड़ (अचेतन) होना चाहिए। सीमित से असीमित की ओर बौद्धिक छलांग (कल्पना) निराधार है।

इस प्रकार सृष्टि वैज्ञानिक तर्क के आधार पर निश्चित रूप से यह अनुमान नहीं लगाया जा सकता है कि सृष्टि का आदि कारण ईश्वर ही है। रसल के अनुसार इस युक्ति का प्रमुख दोष यह है कि इसके अन्तर्गत प्राकृतिक-जगत के आदि कारण की व्याख्या के लिए जिस कारण-कार्य नियम का आश्रय लिया जाता है, अनवस्था दोष से बचने के लिए उस कारण-कार्य नियम का परित्याग कर दिया गया है। दूसरे शब्दों में, कारणात्मक दृष्टि से ईश्वर के बारे में विचार नहीं किया जाता है। इस युक्ति में चक्रक दोष है, क्योंकि ईश्वर के प्रत्यय का कारण ईश्वर को पहले से ही मान लिया गया है। एक ओर तो डेकार्ट ईश्वर के प्रत्यय को जन्मजात मानते हैं और दूसरी ओर मानव-अनुभव के आधार पर ईश्वर के प्रत्यय का कारण खोजने का प्रयास करते हैं। ईश्वर का प्रत्यय एक साथ जन्मजात और आगन्तुक कैसे हो

शकता है? इस प्रश्न का कोई सन्तोषजनक समाधान डेकार्ट के दर्शन में नहीं प्राप्त होता है। संभवतः इसीलिए जॉन विलडम कहते हैं कि डेकार्ट के द्वारा दिया गया यह तर्क ईश्वर को वास्तविक सत्ता नहीं, बल्कि एक तार्किक संरचना (Logical Construction) बना देता है।

इससे स्पष्ट है कि ईश्वर के अस्तित्व के लिए दिया गया यह तर्क दोषपूर्ण है। वस्तुतः ईश्वर के अस्तित्व को तार्किक युक्तियों के आधार पर सिद्ध नहीं किया जा सकता है। असीम और पूर्ण होने के कारण ईश्वर को तर्कबुद्धि, भाषा और सामान्य मानव अनुभव के आधार पर सिद्ध करने का प्रयास सफल नहीं हो सकता है। वास्तव में, ईश्वर श्रद्धा का विषय है। डेकार्ट द्वारा दी गयी इन युक्तियों का आधुनिक दर्शन के विकास में महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि उसने ईश्वर की सत्ता के सिद्ध करने के लिए धर्मशास्त्री प्रमाणों के स्थान पर तार्किक युक्तियों का प्रयोग किया। इसके परिणाम स्वरूप आधुनिक दर्शन को एक नयी दिशा मिली तथा बुद्धिवादी विचारधारा का मार्ग प्रशस्त हो गया।